International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

# प्राचीन राजस्थान के बौद्धकालीन स्थल

Dr. Pankaj Gaur

Associate Professor, Govt. Girls College, Ajmer, Rajasthan, India

सार

वर्तमान राजस्थान की भौगोलिक सीमा में प्राचीन काल के कई छोटे बड़े स्वतंत्र राज्य हुआ करते थे और राजस्थान प्रान्त बनने से पहले भी यहां कई रियासते थी। इस प्रदेश का आजादी से पहले कभी भी एक शासकीय इकाई के रूप में वर्णन नहीं मिलता है। परंतु वर्तमान राजस्थान की भौगोलिक सीमा में आने वाले कई प्रसिद्ध नगरों और गांवों का उल्लेख विभिन्न स्रोतों में उपलब्ध होता और वहां पर बौद्ध धर्म की उपस्थिति, विकास और अवनति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वर्णन मिलता है। आगे के पृष्ठों में उन में से कुछ का संक्षिप्त उल्लेख इस आशय के साथ किया जा रहा कि पाठक इस भूभाग में प्राचीन काल में फल फूल रहे बौद्ध धर्म से परिचित हो सके। साथ ही पाठक उस दिशा में कुछ सार्थक जानकारी भी हासिल कर सके।

परिचय

मारवाड़ या पश्चिमी मरू प्रदेश एवं बौद्ध धर्म:

आचार्य धीतिक के धर्मप्रचार से मरू भूमि में बौद्ध धर्म की बहुत उन्नति हुई। पश्चिमी मारवाड़ के कई गांव, कस्बे और शहर प्राचीन राजमार्गो पर बसे होने से कई भिक्षुओं का इस प्रदेश से आना-जाना और प्रवास होता रहा और उनके अनुयायियों की निरंतर वृद्धि होती रही। सम्राट कनिष्क के समय इस प्रदेश में कई ख्यातनाम भिक्षु विहार बनाकर विहरते थे, उनमें आचार्य वसुमित्र प्रमुख थे। मिट्टी और लकड़ी के होने से समय के साथ वे विनिष्ट हो गए। उनका अवशेष अब मात्र यहां के लोगों की परंपरा में देखा जा सकता है और कुछ स्थल अभी भी बुद्ध अवशेषों के साथ जीर्णशीर्ण अवस्था मे उसकी गवाही देते है।[1,2,3]

मारवाड़ के किस भूभाग में आचार्य ने विहार किया, यह अभी तक किसी भी पुष्ट प्रमाण से स्पष्ट नहीं हुआ है, परंतु यह स्पष्ट है कि जब कनिष्क ने तीसरी संगीति का आयोजन किया तो आचार्य वसुमित्र को भी आमंत्रित किया गया था। आचार्य वसुमित्र ने ही इस संगीति की अध्यक्षता की थी। यह महायान या महाधर्म के चरम विकास का काल था। इसी समय बहुत से भाष्य लिखे गए। महाराजा कनिष्क के बाद भी इस प्रदेश में बौद्ध धर्म अबाध गति से फलता फूलता रहा। कश्मीर प्रदेश उस समय पूर्णतयाः बौद्ध धर्म आपन्न था। लामा तारानाथ लिखते है:

"तृतीय संगीति के बाद राजा कनिष्क के अतीत हो जाने के बाद पश्चिम कश्मीर के तुखार के पास उत्तरी अश्मपरांत नामक एक भाग में गृहपति जटि नामक एक भोगसमपन्न व्यक्ति हुआ। उसने उत्तर दिशा के सब स्तूपों की पूजा की और पश्चिमी मरुदेश से वैभाषिक भदंत वसुमित्र तथा तुखार के भदंत घोषक को उक्त देश में आमंत्रित किया एवं 300000 भिक्षुओं का बारह वर्षों तक सत्कार किया।.....पुष्कलवती प्रसाद में राजा कनिष्क के पुत्र ने अर्हत आदि 100 आर्यों तथा 10000 भिक्षुओं के लिए पांच वर्षों तक उत्सव मनाया।"

इस वर्णन से स्पष्ट है कि आचार्य भदंत वैभाषिक निकाय के थे। यह स्पष्ट है कि उनकी कर्म भूमि पश्चिमी मरू प्रदेश थी। इससे यह साबित होता है कि वैभाषिक मत का मारवाड़ के जन जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जो आज भी उनके जन जीवन में गहरे रूप से जुड़ा है। यह भी स्पष्ट है कि जटि या जाट लोग उस समय बुद्ध अनुयायी थे। स्तूपों की पूजा अर्चना के बाद बड़ा उत्सव मनाया जाता था और दान परोपकार समपन्न किया जाता था. और भी कई तथ्य उजागर होते है, परंतु जिस महत्वपूर्ण तथ्य कि ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह यह है कि आचार्य वसुमित्र का मारवाड़ से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है और वैभाषिक निकाय का यहाँ प्रभाव रहा है।

आचार्य धीतिक का मालवा के ब्राह्मणों को उपदेश:- पश्चिमी मालवा में एक अदर्प नामक ब्राह्मण राज्य करता था। वह मुकुट धारी राजा नहीं था। अर्थात उसके ऊपर भी कोई महाराजा रहा होगा। वह नित्य यज्ञकर्म करता था। प्रतिदिन हजार बकरों का वध करके वह रक्त मांस से यज्ञ-हवन कराता था। उसके एक हजार यज्ञ कुण्ड थे। उसके राज्य में उसने अपने ब्राह्मण अनुयायियों को भी ऐसे ही यज्ञ करने के फरमान दे रखे थे। वे ब्राह्मण अनुयायी भी अपनी अपनी सम्पति के अनुसार नित्य अजयज्ञ हवन करते थे।

किसी समय उसने गोमेध यज्ञ कराने की इच्छा से भार्गव जाति के भृकु ब्राह्मण ऋषि को आमंत्रित किया। उस यज्ञ में 10,000 उजली गायों का वध(बलि-आहुति) करने के लिए इक्कठी की गयी। सभी ब्राह्मणों को आमंत्रित किया गया और दान दक्षिणा की अन्य सामग्री भी वहां लायी गयी। जज़्ब भृकु ऋषि यज्ञ प्रारम्भ करने लगा तो आचार्य धीतिक भी चारिका करते हुए वहां पहुँच गए। भृकु ऋषि यज्ञ की अग्नि प्रज्ज्वलित करने लगा, पर अग्नि उदीप्त नहीं हुई।उसने बहुत उपाय किया पर अग्नि नहीं जली। न गोओं का वध किया जा सका और न उन्हें घायल ही किया जा सका और न ही ब्राह्मण के वे वेदपाठ करने पर ही उनका उच्चारण हो सका।

इस पर भृकु ऋषि ने बताया कि यह श्रमण के विघ्न से नहीं हो रहा है। यहाँ श्रमण आया हुआ है। उसके प्रभाव से यज्ञ में विघ्न पड़ा है....।

सभी लोग श्रमण आचार्य धीतिक पर लाठी पत्थरो से टूट पड़े।जिसके हाथ में जो आया उसी से आचार्य पर वॉर करने लगे। आचार्य इन सबको सहते रहे। वे लाठी, पत्थर या धूल सभी फूल और चन्दन की चूर्ण होते रहे। जब लोगों को यह नजर आया और देखा कि आचार्य पर इनका कोई असर नहीं पड़ रहा है तो वे आचार्य के चरणों में गिर पड़े। उन्हें प्रणाम कर क्षमा-याचना करने लगे। वे बोले: आचार्य क्या आज्ञा है?

आचार्य ने उन्हें सद्धर्म का उपदेश दिया ।

वे बोले :- "हे! ब्राह्मणों! इन जीवों को छोड़ दो। इस पापपूर्ण और दुष्टतापूर्ण यज्ञ से क्या प्रयोजन सिद्ध होना है? इसके बदले दान करो, पुण्य कमाओं। हे ब्राह्मणों !.. हम ब्रह्माण कुल के देवता है और अग्निक्रिया करने वाले है, फिर देवता और माता पिता की हत्या करने से क्या परिणाम होगा? अपवित्र गौमांस ब्राह्मण तक के लिए स्पृश्य योग्य नहीं है, तो फिर देवताओं को तो अवश्य ही तृप्ति नहीं होगी। हे ऋषियों! इस पाप धर्म का परित्याग करो। मांस भक्षण के लालच में आकर दी गयी इस आहुति से तुम्हें क्या होगा? माया द्वारा पोषित करने का मार्ग दर्शाने वाले वेदमंत्र से लोक ने धोखा खाया है।"[4,5,6]

इस प्रकार से आचार्य धीतिक ने सविस्तार धर्मोपदेश देकर हिंसा के पाप कर्म से उन्हें विरत किया। वे ब्राह्मण धर्मोपदेश सुनने के बाद अपने पापकर्म पर पश्चाताप करते हुए अपने आचार पर लज्जित होने के कारण मुंह नीचा कर विनम्रतापूर्वक पाप शांत होने के उपाय पूछने लगे। आचार्य धीतिक ने उन्हें शरणगमन और पंचशील का उपदेश दिया। उन ब्राह्मणों ने शरणगमन और पंचशील ग्रहण किया।

वहां एक घोसवंत नाम का एक गृहपति रहता था। उसके आराम के अवषेश पर एक महाविहार का निर्माण किया गया और वे सत धर्म के राही बन गए। 500 ब्राह्मण त्रिरत्न के भक्त/अनुयायी बने। आचार्य धीतिक का निर्वाण उज्जैन में हुआ। इस प्रकार से आचार्य धीतिक के प्रभाव से मालवा मे बौद्धधर्म का विशेष प्रसार और प्रभाव हुआ. यह महान सम्राट अशोक के समय की घटना है। इस घटना के समय के आस पास ही अशोक पैदा हुए।

इससे यह बात स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है कि महान सम्राट अशोक के धम्म प्रचार से पहले ही मालवा और मरुप्रदेश अर्थात मारवाड़ आदि में बौद्ध धर्म का विपुल प्रसार हो चुका था।

अग्निकुल की उत्पत्ति और बौद्ध धर्म:- जिस अग्नि कुल की बात की जाती है, वह वास्तव में कुछ लोगों का ब्राह्मणी करण था! अर्थात इन राजपूतों की उत्पति से पहले राजस्थान में बौध्द धर्म का बोल बाला था। वंश प्रकाश ग्रन्थ (पृष्ठ 3 व 4) इसका स्पष्ट उल्लेख करता है। देखें-

"——— कलियुग के 1000 हजार वर्ष के अनुमान बीते उस वक्त बौद्धों का मत बहुत फ़ैल गया और वेद के मानने वाले कम रह गए और दैत्य भी बढ़ गए। इस वास्ते वशिष्ठ जी ऋषि ने बौद्धों के मत के खंडन और दैत्यों के मारने और वेद का मत चलाने वास्ते आबू पहाड़ पर यज्ञ किया। उस यज्ञ के अग्नि कुण्ड से चार क्षेत्रिय पैदा हुए। पहले प्रतिहार, 1 जिनको पडिहार जी, दूसरे चालुक्य जी, 2 जिनको सोलंखी जी, तीसरे प्रामार,3 जिसे पंवार, चौथे 4 चाहुवाण जी, जिनको चौहाण जी कहते है।

ये असुर मारे गए और वाशिष्ट जी वगैरह ऋषि लोगों की सहायता से दिल्ली में राज पा कर बहुत से बौद्धों को मार कर वेद मत को बढ़ाया...[7,8,9]

कोटा के शेरगढ़ का अभिलेख- बौद्ध धर्म से संबंधित कई लेख, मूर्तिया, सिक्के व अन्य अवशेष मिले है, जो इस भूभाग में बौद्ध धर्म के व्याप्त होने के पर्याप्त प्रमाण है, यथा एक अभिलेख में त्रिरत्न की वंदना करते हुए अभिलेख लिखा गया है। अतः इस मे कोई संदेह नहीं रह जाता है कि ये लेख बुद्ध अनुयायियों द्वारा ही उत्कीर्ण किये गए है:-

"ओम नमो रत्नत्रयाय। जयंति वादाः सुगतस्य निर्मला समस्त संदेह।

निरासभासुराः कुतक्कसंपात निपातहेतवो युगांतवाता इव विश्वसंतते।।"

राजस्थान प्रान्त के कोटा जिले के दक्षिण में परवान नदी के किनारे बसे शेरगढ़ में उक्त अभिलेख मिला है। वहां पर अवस्थित कुछ बौद्ध गुफाएं पुरातन काल मे यहां समृद्ध बौद्ध धर्म की गाथा बयान करती है। यहां प्राप्त संस्कृत में लिपिबद्ध पुरालेख से ज्ञात होता है कि 790 ईसवी में यहां किसी देवदत्त नामक सामंत ने संवर्धनगिरी पर बौद्ध मठ और विहार का निर्माण कराया था। अभिलेख में उससे पहले के तीन शासक यथा बिंदुनाग, पद्म नाग और सवा नाग के नाम भी मिलते है। जिनका समय 6ठी से 8वीं शताब्दी के बीच का रहा है। इससे यह प्रमाणित है कि राजस्थान के इस भूभाग में नागवंशीय लोगों का शासन था और उस समय बौद्धधर्म उन्नत स्थिति में था। इसके अलावा और कई स्थलों पर बौद्ध अवशेष पाए गए है, जो इस भूभाग को बौद्ध धर्म की स्थली कहे जाने का प्रमाण है। राजस्थान के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्यभाग में प्रचुर रूप से ऐसे पूरा-अवशेष मिलते है जो इसे बुद्ध भूमि के रूप में मानने का कारण पैदा करते है।

राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित बाड़मेर से लगभग 165 मील दूर मीरपुर खास में बहुत बड़ा बौद्ध स्तूप मिल चुका है, जो बाड़मेर के अंतिम रेलवे स्टेशन मुनाबाव से 106 किमी की दूरी पर वर्तमान पाकिस्तान में अवस्थित है। सन 1902 में किसी अंग्रेज ने इस स्थल की खोज की थी। सन 1917 में आर्काइयोलॉजी सुर्वे ऑफ इंडिया के डॉ डी आर भंडारकर आदि ने इसका मुहायना किया था। बाड़मेर के किराडू गांव के प्राचीन खंडहर में बुद्ध की लेटी हुई मूर्ति प्राप्त हो चुकी है। जैसलमेर के वैसाखी गांव में मेघवालों की पटियाल के पास बावड़ी और मठ के अवशेष मिल चुके है। जिसे अशोक कालीन माना जाता है। यहाँ पर शदियों से परंपरागत रूप से आज भी बुध्द पूर्णिमा को मेला लगता है और अनाथों को अनाज आदि का दान दिया जाता है। जोधपुर के निकट मंडोर में बुद्ध अवशेष और आसपास के क्षेत्रों के नाम यथा, नागादड़ी, नाग गंगा, बाणगंगा, आदि यहां बुद्ध अनुयायी नागवंशीय राजाओं के शासन की पुष्टि भी करते है। अजमेर, बसंतगढ़(सिरोही) तथा अन्य जगहों पर विष्णु के रूप में बुद्ध मूर्तियों का होना और उसकी पूजा अर्चना करना पुराणों के विष्णु अवतार के रूप में बुद्ध का ब्राह्मण धर्म मे खप जाना या मिला दिया जाना स्पष्ट करता है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर से 90 किमी दूर विराटनगर (बैराठ) के पारियात्र पहाड़ी पर अशोक द्वारा निर्मित स्तूप के अवशेष संज्ञात हो चुके है और वहां से अशोक के शिलालेख भी प्राप्त हुए है। बैराठ के बीजक पहाड़ी पर बौद्ध विहार के अवशेष और अशोक के शिलालेख तथा भीमसेन डूंगरी का अशोककालीन शिलालेख आदि यहां बौद्ध धर्म के फलने-फूलने की कहानी बयां करते है। यहां पुरावशेष की अन्य सामग्री यथा सिक्के, धातु आदि भी मिले है। जयपुर से ही 90 किमी दूर दौसा जिले के लालसोट में शुंगकालीन बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए है।

जयपुर से 45 किमी दूर चत्सु या चाकसू से भी बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए है। इसका प्राचीन नाम चंद्रावती कहा जाता है। सिरोही के पास स्थित चंद्रावती से यह अलग है। स्थानीय लोग इसका प्राचीन नाम तम्बवती या पहपावती बताते है। स्थानीय लोग यह भी बताते है कि किसी पहप नाम के राजा के कारण इसका नाम पहपावती पड़ा। सन 1871-1872 में कॉलेले ने, सन 1919-1920 में डी आर भंडारकर ने व सन 1936-1936 में दयाराम साहनी ने इसका सर्वे व उत्खनन किया। यहां प्राप्त प्राचीन प्राचीर और बुद्ध की मूर्ति, जिसे जयपुर के एम्बर म्यूजियम में रखा हुआ है, व अन्य प्रमाणों से यह प्रमाणित किया गया कि यह बौद्ध धर्म का एक गढ़ था।

आगरा से 65 मील दक्षिण-पश्चिम से गंभीर नदी के बायीं ओर बयाना नगर बसा हुआ है। बयाना से 6 मील पश्चिम में विजयमन्दर गढ़ बसा है, जिसका प्राचीन नाम शांतिपुर था और वह बौध्द धर्म का एक समृद्ध नगर था। बयाना नगर की स्थापना राजा बल या बलि के पुत्र बाणासुर ने की थी। प्राचीन समय मे यह भी बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध नगर था। फतेहपुर सीकरी से 20 किमी और आगरा से 32 किमी दूर बाणगंगा के किनारे बसा रूप वास भी प्राचीन काल में बौद्धआबादी वाला नगर था। यहां प्राप्त अवशेष मथुरा में प्राप्त बौद्ध अवशेषों से साम्यता रखते है। जिस से प्रमाणित है कि मथुरा में प्रचलित बौद्ध मत का ही यहां प्रचार था।

टोंक जिला मुख्यालय से 27 किमी दूर रेड कस्बे में केदारनाथ पुरी द्वारा की गई खुदाई (1938) से यह सुस्पष्ट हुआ कि बौद्ध संस्कृति का यह एक प्रमुख नगर था और यहां हीनयान और महायान दोनों सम्प्रदाय फलीभूत हुए है। भरतपुर जिले के नोह में भी इसी प्रकार के बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए है।

नागौर जिले के छोटी खाटू कस्बे में 8वीं-9वीं शताब्दी के बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए है। जोधपुर के पास अवस्थित ओसियां कस्बे के 8वीं-9वीं शताब्दी के प्रतिहार कालीन मंदिर का शिल्पांकन भी बौद्ध कला की निरंतरता को प्रमाणित करता है। छोटी खाटू में शिलाखंड पर बचपन मे शुद्धोदन की गोद मे बैठे हुए सिद्धार्थ (बुद्ध) का उत्कीर्णन प्राप्त होता है। यहां पर बुद्ध की अन्य उत्कीर्ण आकृतियां भी मिलती है।

अजमेर जिले के पुष्कर में कुषाण कालीन अवशेष प्राप्त होते है और सांची के अभिलेख से यह प्रमाणित है कि प्राचीन काल मे यह एक बौद्ध तीर्थ स्थल था, जहां से चार भिक्षु, तुड़ा, बुद्धरक्षित, नागरक्षित और संघरक्षित ने सांची के स्तूप उद्घाटन के समय भाग लिया था। अजमेर जिले के बड़ली गांव में सन 1912 में जी एच ओझा ने एक शिलालेख खोजा, जो ब्राह्मी लिपि का सबसे

प्राचीन शिलालेख माना गया है। इस से यह प्रमाणित है कि उस समय इस प्रदेश की भाषा प्राकृत(पालि) और लिपि ब्राह्मी रही है। 8वीं-9वीं शताब्दी में अजमेर क्षेत्र में बौद्ध धर्म बना हुआ था। पृथ्वीराज रासो में बीसलदेव के पुत्र सारंग देव के बौद्ध धर्म स्वीकार करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। ("अति दुचित्त भयौ सारंग देव।

'नित प्रति करे अरिहंत सेव ।

बुध धम्म लियो बांधे न तेग ।

मुनि स्रवन राज मन भौ उदेग।, -चंद्रवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो)

डग-भिवानी मार्ग पर डग से 10 किमी दूर गुणाई के पास कोलवी विहार और कोलवी गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएं और अवशेष सही सलामत स्थिति में अवस्थित है। इनके निर्माण और निर्माणकर्ता के नाम अभी भी अज्ञात है, परंतु बुद्ध की भव्य मूर्तियां और अन्य अवशेष यहां बौद्ध धर्म की मजबूत उपस्थिति को प्रमाणित करते है। यहां के कुछ अवशेष तांत्रिक बौद्ध धर्म की उपस्थिति को भी सुस्पष्ट करते है।

मंदसौर के निकट राजस्थान के झालावाड़ जिले में प्राप्त बौद्ध गुफाएं काली और एलोरा की गुफाओं की समकालीन है। हथियगौर और गुणाई की ये गुफाएं 15 फुट लंबी, 14 फुट चौड़ी एवं 22 फुट ऊंची है। विनायगा गुफा के सामने बौद्ध स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए है। नारायण गुफा एक ही पहाड़ी को काट कर बनाई गई है। मंदसौर से प्राप्त पुरालेख 'सिद्धम' शब्द से शुरू होता है और इसमें बुद्ध को 'सुगत' से संबोधित किया गया है।[10,11,12]

राजस्थान-मध्यप्रदेश की सीमा में राजस्थान के झालरापाटन से 80 किमी दूर धम्मनगर में 80 से ज्यादा बौद्ध गुफाएं अवस्थित है। जेम्स टॉड ने इन गुफाओं को खोजा था। फर्गुसन यहां आ चुके हैऔर कन्नीघम ने इनका विवरण दिया है। यहां प्राप्त चैत्य को वर्तमान में बड़ी कचहरी के नाम से जाना जाता है। बुद्ध की समाधिस्थ मूर्तियां और अन्य अवशेष इस भूभाग में बौद्ध धर्म की सघन उपस्थिति को प्रमाणित करते है।

जालोर जिले के भीनमाल का जिक्र हुएनसांग ने किया है और हीनयान सम्प्रदाय के सर्वास्तिवादी के सैकड़ो श्रमणों के विहरने का वर्णन किया है। गुर्जर राजाओं की यह कभी राजधानी हुआ करता था, जिन्होंने बुद्ध विहार और मठ का निर्माण कराया। जालोर के निकट ही बाड़मेर है, ह्वेनसांग के यात्रावृतांत में उल्लेखित मार्ग से उस काका बाड़मेर जाना भी स्पष्ट होता है।

उदयपुर जिले में अशोक स्तंभ और अन्य अवशेष प्राप्त हुए है। चितौड़गढ़ में स्तूप और बुद्ध की मूर्तियां प्राप्त हुई है। चितौड़गढ़ से 13 किमी दूर नगरी गांव में, जिसे प्राचीन काल मे माध्यमिका कह कर वर्णित किया गया है, उस कस्बे में ब्राह्मी लिपि में लेख, स्तूप और अन्य पुरावशेष मिलते है। जो इस नगर की प्राम्भिक खुदाई डॉ डी आर भंडारकर ने 1919-20 में की थी, जिसका बाद में हेनरी कॉन्सेस ने सर्वे किया। नगरी प्राचीनकाल में बौद्ध संस्कृति का समृद्ध केंद्र था।

राजस्थान के बीकानेर संभाग में मुंडा, पीर सुल्तान री थारी और बडोपाल ने भी बुद्ध और बौद्ध अवशेष मिले है। बडोपाल रंगमहल से 11 किमी दूर है और मुंडा हनुमानगढ़ जिले में है। पीर सुल्तान की थड़ी बीकानेर के दक्षिण में है। डॉ टेसिट्री ने पीर सुल्तान की थरी, मुंडा और बडोपाल में एक एक स्तूप को खोज निकाला था, परंतु आज में खुर्द-बुर्द हो चुके है। यहां पर मौर्यकालीन सभ्यता के सुप्रमाण मिलते है। रंगमहल घग्गर नदी के मुहाने पर अवस्थित है। टेसिट्री द्वारा 1918-1919 में किये गए अन्वेषण में रंगमहल की सभ्यता को पहली शताब्दी का माना है, जिसका विकास 5वीं से 7वीं शताब्दी तक होता रहा। लगभग 6ठी शताब्दी में घग्गर नदी सुख गयी। यहां कुषाण कालीन सिक्के और अन्य अवशेष प्राप्त हुए है, जो बौद्ध धर्म की उपस्थिति को प्रमाणित करते है। यहां से प्राप्त मृदभांड रामपुर, बैराठ, रेड, हतिनपुर और टेस्ला आदि जगहों पर प्राप्त मृदभांड जैसे ही है।

इस फुटकर जानकारी से यह बात स्पष्ट होती है कि प्राचीन काल में राजस्थान प्रान्त बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों से आबाद था, परंतु यहां पर बौद्ध धर्म का विकास और अवनति कैसे हुई और बौद्ध धर्म की अवनति होने या विधर्मियों के आक्रमणों से आहत बौद्ध धर्म को मानने वाली जनता कहाँ चली गयी या उसका दूसरे धर्मों या मतों में परिवर्तन कैसे हुआ, इसके बारे में अनुमान के अलावा कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है।

विचार-विमर्श

भारत में राजस्थान राज्य के झालावाड़ जिले में, शहर मुख्यालय से लगभग 90 किलोमीटर दूर कोलवी गांव में लगभग 2 हजार साल पुरानी बौद्ध गुफाएं स्थित हैं। यह गुफाएं राजस्थान के झालावाड़ और आसपास के इलाके में बौद्ध सभ्यता का प्रमाण हैं। यहां पर पहले 50 गुफाएं थीं जिनमें से अब कुछ ही शेष रह गयी हैं। यह गुफाएं अश्व नाल प्रकार की हैं जिन्हें चट्टानों को काटकर बनाया गया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

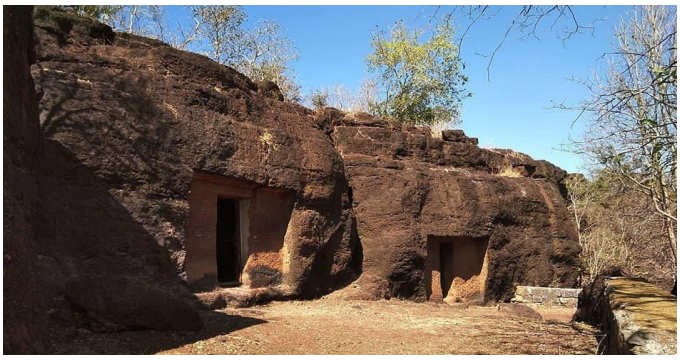

इन गुफाओं में एक चैत्य कक्ष है जिसके भीतर ध्यान मग्न बुद्ध देव की प्रतिमा है। यहां पर बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए कमरे भी निर्मित हैं जिनमें एक तरफ तकिए भी बने हुए हैं। इसके अलावा यहां पर अग्नि कुण्ड, बुद्ध देव की मूर्तियां, चक्र गंडिका स्तूप और चैत्य बने हुए हैं। कोलवी की गुफाओं में 64 भिक्षु आवासों के खंडहर एक बड़े परिसर में स्थित हैं जिनमें स्तूप और ध्यान कक्ष हैं। सबसे बड़ी प्रतिमा 12 फ़ीट की है जो उपदेश मुद्रा में है।

कोलवी से मिले प्रमाणों का जिक्र सर्वप्रथम 1854 में डॉ. इम्पे ने किया। कालांतर में जनरल कनिंघम ने इस पर शोध किया।कोलवी के अतिरिक्त झालावाड़ और टोंक जिले की सीमा पर बहुमंजिला संरचनाओं वाली कुल 50 गुफाएं हैं। अलवर में बैराठ तथा दौसा में भांजा रेंज में अशोक कालीन स्तम्भों के अवशेष मौजूद हैं। गुनाई में 9 तथा विनायका में 24 गुफाएं आज़ भी मौजूद हैं। यहां पर हीनयान और महायान दोनों शाखाओं के स्थापत्य हैं।

झालावाड़ को राजस्थान का नागपुर के उप नाम से भी जाना जाता है। इसे वृज नगर, जालाओं की भूमि तथा घंटियों का नगर भी कहा जाता है। राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में स्थित झालावाड़ हाड़ौती क्षेत्र का हिस्सा है। काली सिन्ध नदी यहां की मुख्य नदी है। मालवा के पठार के एक छोर पर बसा झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-12 (जयपुर-जबलपुर) पर स्थित है। कोटा शहर से इसकी दूरी लगभग 85 किलोमीटर है। होली और विवाह के अवसर पर यहां बिंदोरी नृत्य किया जाता है।

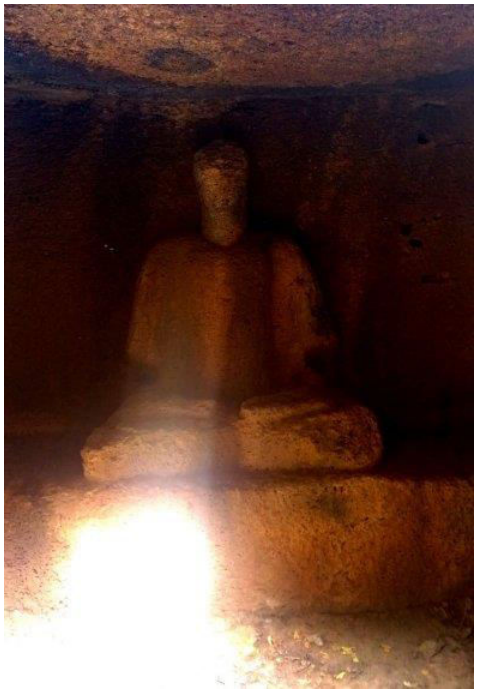

ध्यान मग्न बुद्ध देव, कोलवी बौद्ध गुफाये।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

चैत्य हॉल, कोलवी बौद्ध गुफाये।

बैराठ

प्राचीन भारत में विराट पुर के नाम से मशहूर बैराठ, राजस्थान की राजधानी जयपुर से 85 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित एक तहसील स्तरीय कस्बा है। वाणगंगा नदी के किनारे स्थित बैराठ, प्राचीन काल में 16 महाजनपदों में से एक मत्स्य जनपद की राजधानी थी। पर्वतीय कंदराओं, गुफाओं एवं वन्य प्राणियों वाले वैराठ क्षेत्र में ही पाण्डवों ने अज्ञातवास के दिन बिताए थे। यहां से प्रागैतिहासिक काल, मौर्य काल तथा मध्य काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

महाराजा रामसिंह के शासनकाल में किलेदार किताजी खंगारोत के द्वारा कराए गए उत्खनन के दौरान यहां से स्वर्ण कलश में भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेष मिले हैं। विराट नगर में पाषाण काल का हथियारों के निर्माण का एक बड़ा कारखाना मिला है। 1936-37 में दयाराम साहनी द्वारा वैराठ सभ्यता का सर्वप्रथम उत्खनन कार्य किया गया। पुनः 1962 में यहां की खुदाई कैलाश दीक्षित व नील रतन बनर्जी के द्वारा किया गया।

बैराठ की बीजक पहाड़ी से 1837 में कैप्टन बर्ट ने सम्राट अशोक के भाब्रु शिलालेख की खोज की। इस शिलालेख के पहिए पर प्राकृत भाषा में, ब्राम्ही लिपि में बुद्ध, धम्म् और संघ का उल्लेख है। शिलालेख में अशोक को मगध का राजा कहा गया है। 1840 में इस शिलालेख को उठाकर कलकत्ता के संग्रहालय में सुरक्षित रख दिया गया है। बीजक पहाड़ी से ही मौर्य कालीन बौद्ध विहार, स्तूप तथा बुद्ध की मथुरा शैली में बनी मूर्ति के अवशेष भी मिले हैं।

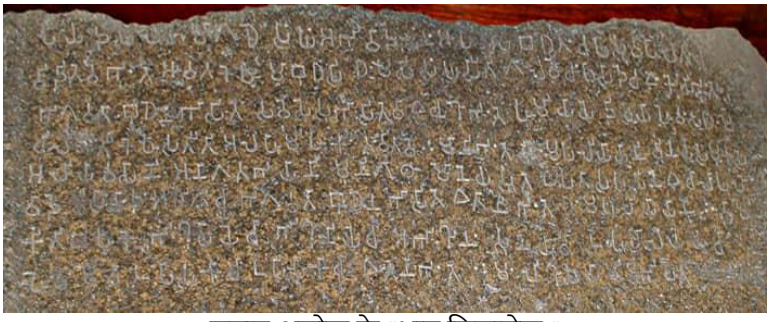

सम्राट अशोक के "भाब्रु शिलालेख "

बैराठ में 36 मुद्राएं सूती कपड़े में बंधी हुई मिली हैं। जिनमें से 8 पंचमार्क चांदी की, 28 इंडो-ग्रीक, जिनमें 16 यूनानी राजा मिनेण्डर की हैं। कोटा के समीप कर्ण संवा नामक गांव से प्राप्त शिलालेख में एक मौर्य वंश के शासक राजा धवल का उल्लेख मिलता है। राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख भी चित्तौड़गढ़ शिलालेख में पाया जाता है। इसी प्रकार श्रृंगी ऋषि के शिलालेख में भील जनजाति के सामाजिक जीवन का उल्लेख मिलता है।

बैराठ की भीम डूंगरी से सी.एल. कार्लाइल ने 1871 में शंख लिपि से उत्कीर्ण शिलालेख की खोज की। शंख लिपि, ब्राम्ही लिपि को अत्यधिक अलंकृत करके उसे गुप्त रूप प्रदान करती थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृत्तांत में बैराठ (पारयात्र) का उल्लेख किया था। उसने यहां का क्षेत्रफल ढाई मील बताया था तथा 8 बौद्ध मठों का उल्लेख किया था। बैराठ से तांबा निकाला जाता था। यहां पर अकबर ने टकसाल खोली थी। यहां पर मिले शैल चित्रों से इसकी प्राचीनता प्रमाणित होती है।[13,14,15]

बैराठ में किए गए पुरातत्व उत्खनन से यह प्रमाणित होता है कि यह बौद्ध धर्म अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित था तथा सम्राट अशोक का इस क्षेत्र से विशेष लगाव था। प्रसिद्ध पुरातत्वविद दयाराम साहनी मानते हैं कि हूण शासक मिहिरकुल ने यहां का विनाश किया।आज, बैराठ शाहपुरा- अलवर मार्ग पर स्थित है। विराट की कन्या उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ था।

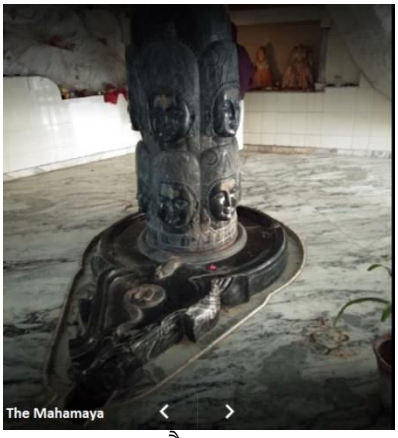

बुद्ध स्तूप, बैराट, राजस्थान।

वैज्ञानिक भाषा में अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहते हैं। जिन अभिलेखों में मात्र किसी शासक की उपलब्धियों का बखान होता है, उसे प्रशस्ति कहते हैं। अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख इत्यादि आते हैं। भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख सम्राट अशोक के हैं। माना जाता है कि अशोक राजा को अभिलेखों की प्रेरणा ईरान के शासक डेरियस से मिली थी। अशोक राजा के ब्राम्ही लिपि में लिखित संदेश को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था। जेम्स प्रिंसेप, अलेक्जेण्डर कनिंघम के मित्र थे। सम्राट अशोक के शिलालेखों का मुख्य उद्देश्य समाज में अच्छे जीवन के आदर्शों को चरितार्थ करना था।

## परिणाम

राजस्थान में बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ी संख्या में विहारों, मठों, स्तूपों, चैत्यों तथा मूर्तियों का निर्माण किया। बैराठ, रैढ़, चित्तौड़, लालसोट, कोलवी, पुष्कर तथा रंगमहल आदि स्थल बौद्धों के बड़े केन्द्र थे। अचानक भारत के इतिहास में ऐसा मोड़ आया कि ये समस्त स्मारक आग के हवाले कर दिये गये।संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश देने वाले महात्मा बुद्ध के कैवल्य ज्ञान प्राप्ति के बाद पूरे देश में तेजी से उनके अनुयायी बढ़ गये थे। भारत के विभिन्न शक्तिशाली राजाओं ने महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को अपने साम्राज्य में प्रचारित किया। महात्मा बुद्ध के चरण बुंदेलखण्ड भूमि पर भी पड़े होंगे। बुंदेलखण्ड के विभिन्न भागों में प्राचीन बोद्ध धर्म के साक्ष्य आज भी प्राप्त होते हैं।

### प्राचीन बुंदेलखण्ड में भी था बौद्ध धर्म का प्रभाव

इतिहासकार डॉ. चित्रगुप्त बताते हैं कि, झांसी से कुछ किलोमीटर की दूरी पर दतिया जिले में स्थित गुर्जरा शिलालेख इस बात की पुष्टि करता है। इस अभिलेख को महान मौर्य सम्राट अशोक ने लिखवाया था। इस शिलालेख की सबसे खास बात यह है कि इस शिलालेख में मोर्य सम्राट का नाम अशोक लिखा है। यदि अशोक के मास्की शिलालेख को छोड़ दिया जाये तो पूरे देश विदेश में उसके द्वारा स्थापित किसी अन्य शिलालेख में अशोक नाम नहीं आता। इस दृष्टि से भी यह शिलालेख पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इस शिलालेख की लिपि ब्राम्ही और भाषा प्राकृत है। इसका समय दूसरी सदी ईसा पूर्व माना गया है।

### देवगढ़ में खोजीं गयीं बौद्ध गुफाऐं

इसके अलावा ललितपुर के देवगढ़ में कुछ ही वर्ष पूर्व बौद्ध गुफाऐं खोजीं गयीं हैं, जिनमें बेतवा नदी किनारे देवगढ़ पहाड़ी पर चट्टानों को तराश कर महात्मा बुद्ध और संघ से संबंधित विभिन्न घटनाओं को प्रदर्शित किया गया है। इनमें भगवान बुद्ध की दुर्लभ

मूर्ति है, जिसमें ध्यानमग्न बुद्ध को कैवल्य ज्ञान प्राप्ति से रोकने के लिए विविध तरीके से उन पर अनेक कठिनाईयां डाला जाना दर्शाया गया है।

### बौद्ध धर्मानुयायियों और शोधार्थियों के लिए ये बहुत महत्वपूर्ण

इतिहासकार डॉ. चित्रगुप्त बताते हैं कि ये बौद्ध धर्मानुयायियों और शोधार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। झांसी जिले के एरच में भी विद्वानों के मतानुसार एक बौद्ध मठ था जो केवल स्त्रियों के लिए ही था। महिलाओं को महात्मा बुद्ध के जीवन काल में ही संघ में शामिल कर लिया गया था। संभवतः उसी रूप में एरच में भी बौद्ध भिक्षुणी और साधिकाओं के लिए मठ बनाया गया होगा। वर्तमान में इसके अवशेष नष्ट हो चुके हैं। [16,17,18]

### महोबा में भी एक टीले की खुदाई से मिल चुकी हैं अनेक बौद्ध प्रतिमा

बुंदेली संस्कृति प्राचीन काल में मालवा तक प्रचलित थी। सांची का बौद्ध स्तूप विश्व प्रसिद्ध है। बुंदेलखण्ड के ही महोबा जिले में एक टीले की खुदाई से अनेक बौद्ध प्रतिमाऐं प्राप्त हुईं थीं, जिसमें से एक राजकीय संग्रहालय झांसी में भी सुरक्षित है। शिवपुरी जिले में स्थित राजापुर गांव में बौद्ध स्तूप और चंदेरी के पास बेहटी गांव में बौद्ध मठ भी प्राप्त होते हैं। डॉ. चित्रगुप्त के अनुसार इस प्रकार प्राचीन बुंदेलखण्ड में बौद्ध धर्म का प्रसार लोक जीवन में हो चुका था। यहां संस्कृति समस्त धर्मों-मतों को सुशोभित करती रही है।[19]

## निष्कर्ष

बौद्ध धर्म एक आस्था है जिसकी स्थापना सिद्धार्थ गौतम ने की थी - जिन्हें "बुद्ध" के नाम से भी जाना जाता है - भारत में 2,500 साल से भी पहले। अनुमानित 500 मिलियन से एक अरब अनुयायियों के साथ, विद्वान बौद्ध धर्म को प्रमुख विश्व धर्मों में से एक मानते हैं। एक गैर-आस्तिक आस्था के रूप में जिसमें पूजा करने के लिए कोई भगवान या देवता नहीं है, कुछ विद्वान बौद्ध धर्म को एक संगठित धर्म के बजाय एक दर्शन या एक नैतिक संहिता के रूप में वर्णित करते हैं।

बौद्ध धर्म की कई मान्यताएँ और प्रथाएँ दुख की अवधारणा और उसके कारणों के इर्द-गिर्द घूमती हैं। बौद्ध धर्म ऐतिहासिक रूप से पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में सबसे प्रमुख रहा है, लेकिन इसका प्रभाव पूरे पश्चिम में बढ़ रहा है। कई बौद्ध विचार और दर्शन अन्य धर्मों के साथ मेल खाते हैं।[20]

## संदर्भ

1. Kinnard, Jacob N. (1 October 2010). The Emergence of Buddhism: Classical Traditions in Contemporary Perspective (अंग्रेज़ी में). Fortress Press. पृ॰ 1. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-8006-9748-8.
2. ↑ "Indian rationalism, Charvaka to Narendra Dabholkar". मूल से 22 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 अगस्त 2018.
3. ↑ Astronomical Dating of the Mahabharata War. Ekkirala Vedavyas. 1986. पृ॰ 229.
4. ↑ History of the Mathematical Sciences. Ivor Grattan-Guiness. पृ॰ 54. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-85931-45-6.
5. ↑ Dates of the Buddha. Shriram Sathe. 1987. पृ॰ 137.
6. ↑ Chronology of Ancient Hindu History, Volume 1. India: Kota Venkatachelam. The dates tally accurately with 27-3-1807 B.C. , as the date of the Nirvana of the Buddha .
7. ↑ Building a New India: An Agenda for National Renaissance. Subramanian Swamy. 1992. पृ॰ 67. Buddha's Nirvana 1807 B.C. , Maurya Chandragupta c . 1534 B.C. , Harsha Vikramaditya ( Parmar ) c . 82 B.C.
8. ↑ Die Datierung Des Historischen Buddha. Heinz Bechert. 1991. पृ॰ 104. Ramachandran fixes the date of the Buddha's death in 1807 B.C.
9. ↑ Chronology of Kashmir History Reconstructed. Kota Venkatachalam. 1955. पृ॰ 143. Buddha's Nirvana happened in 1807 B.C.
10. ↑ Origin of Orissa Names. Arun Kumar Upadhyay. 2000. पृ॰ 16. Siddhartha- Birth 1887 BC , became Buddha 1852 BC , Death ( nirvana ) 1807 B.C.
11. ↑ Glimpses of Bhāratiya History. India: Rajendra Singh Kushwaha. 2003. पृ॰ 35. Buddha was born in the year 1887 BC and his Nirvana took place in 1807 BC .

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

12. ↑ The Origin of Mathematics. America: V. Lakshmikantham, S. Leela. 2000. पृ॰ 21. Buddha attained Nirvana when he was 80 years old . Thus he lived during 1887-1807 B.C.
13. ↑ Historic Dates. Velandai Gopalayyar Ramachandran. 1991. पृ॰ 55. The dates tally with 27-3-1807 as the date of Nirvana of Lord Buddha .
14. ↑ Origin and History of Mathematics. J. Vasundhara Devi, S. Leela, Cambridge Scientific Publishers. 2005. पृ॰ 27. The famous Buddha , for example , lived during 1887 to 1807 B.C. and not in 563-483 B.C. as was adopted .
15. ↑ Manadēśamu-manasaṃskr̥ti. india: Ekkirala Vedavyas. 1970. पृ॰ 158. The dates tally accurately with 27-3-1807 B.C. as the date of Nirvana of Lord Buddha .
16. ↑ "The Dating of the Historical Buddha: A Review Article". मूल से 26 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 फ़रवरी 2007.
17. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 5 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 अक्तूबर 2015.
18. ↑ "संग्रहीत प्रति" (PDF). मूल (PDF) से 15 अप्रैल 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 अप्रैल 2010.
19. ↑ "त्रिपिटक". मूल से 6 जून 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 30 सितंबर 2011.
20. ↑ Norman 1997, पृ॰ 33.